बंधुत्व, जाति तथा वर्ग

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» महाभारत का समालोचनात्मक संस्करण

प्रश्न 1 (आसान). महाभारत का समालोचनात्मक संस्करण कब शुरू किया गया था?
उत्तर – 1919 में

प्रश्न 2 (आसान). इस परियोजना का नेतृत्व किसने किया था?
उत्तर – वी.एस. सुकथांकर ने

प्रश्न 3 (मध्यम). विद्वानों ने पांडुलिपियों की तुलना करते समय किन दो मुख्य बातों पर गौर किया?
उत्तर – उन्होंने देखा कि संस्कृत पाठ के कई अंशों में समानता थी (यह पूरे उपमहाद्वीप में समान था), और दूसरा, कई क्षेत्रीय भिन्नताएं भी थीं।

प्रश्न 4 (कठिन). यह परियोजना क्यों महत्वपूर्ण थी? हमें इससे क्या पता चला?
उत्तर – यह परियोजना इसलिए महत्वपूर्ण थी क्योंकि इससे हमें महाभारत का एक प्रामाणिक पाठ मिला। साथ ही, हमें पता चला कि सदियों के दौरान कैसे यह पाठ पूरे उपमहाद्वीप में फैला और अलग-अलग क्षेत्रों में लोगों ने इसे अपनी समझ और परंपरा के अनुसार थोड़ा बदल भी लिया था, जो हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक विविधताओं को दर्शाता है।

» परिवार और बंधुता का अर्थ

प्रश्न 5 (आसान). परिवार को संस्कृत ग्रंथों में किस शब्द से संबोधित किया गया है?
उत्तर – 'कुल'।

प्रश्न 6 (आसान). बंधु-बांधवों के बड़े समूह के लिए कौन सा शब्द प्रयोग होता था?
उत्तर – 'जाति'।

प्रश्न 7 (मध्यम). प्राचीन समाजों में परिवार और बंधुता का अध्ययन क्यों महत्वपूर्ण है?
उत्तर – यह लोगों की सोच और क्रियाकलापों को समझने में मदद करता है।

प्रश्न 8 (कठिन). क्या सभी समाजों में रक्त संबंधों की परिभाषा एक जैसी होती थी? उदाहरण से समझाओ।
उत्तर – नहीं, रक्त संबंधों की परिभाषा अलग-अलग समाजों में अलग-अलग थी। जैसे, कुछ समाजों में चचेरे भाई-बहनों को भी सगा माना जाता था, जबकि अन्य में नहीं।

» पितृवंशिक व्यवस्था का आदर्श

प्रश्न 9 (आसान). पितृवंशिकता का अर्थ क्या है?
उत्तर – पितृवंशिकता का अर्थ है वह वंश परंपरा जो पिता से पुत्र, फिर पौत्र आदि से चलती है, और इसमें पिता के संसाधनों पर पुत्र का अधिकार होता है।

प्रश्न 10 (आसान). प्राचीन भारतीय राजवंश कौन सी व्यवस्था का पालन करते थे?
उत्तर – अधिकांश प्राचीन भारतीय राजवंश पितृवंशिकता प्रणाली का अनुसरण करते थे।

प्रश्न 11 (मध्यम). महाभारत का युद्ध किस व्यवस्था को सुदृढ़ करने में सहायक था?
उत्तर – महाभारत का युद्ध पितृवंशिक व्यवस्था के आदर्श को सुदृढ़ करने में सहायक था, क्योंकि यह सत्ता के उत्तराधिकार को लेकर ही लड़ा गया था।

प्रश्न 12 (कठिन). पितृवंशिकता में पुत्रियों की स्थिति कैसी थी? उन्हें क्या अधिकार थे?
उत्तर – पितृवंशिकता में पुत्रियों को अलग तरह से देखा जाता था। पैतृक संसाधनों पर उनका कोई अधिकार नहीं था और उन्हें अपने गोत्र से बाहर विवाह करना अपेक्षित था।

» विवाह के नियम और प्रकार

प्रश्न 13 (आसान). अगर कोई व्यक्ति अपने ही समूह या गोत्र के अंदर विवाह करता है, तो उसे क्या कहते हैं?
उत्तर – अंतर्विवाह

प्रश्न 14 (आसान). एक पुरुष की कई पत्नियाँ होने की प्रथा को क्या कहते हैं?
उत्तर – बहुपत्नी प्रथा

प्रश्न 15 (मध्यम). मनुस्मृति में विवाह के कितने प्रकार बताए गए हैं? उनमें से किन्हीं दो 'उत्तम' प्रकारों का नाम बताओ।
उत्तर – मनुस्मृति में विवाह के 8 प्रकार बताए गए हैं। उनमें से पहले चार 'उत्तम' माने जाते थे, जैसे: कन्या का दान करके वेदज्ञ वर को देना, या पिता द्वारा वर-वधू को दायित्वों के पालन का निर्देश देकर कन्यादान करना।

प्रश्न 16 (कठिन). धर्मशास्त्रों में वर्णित विवाह के नियम वास्तविक सामाजिक संबंधों से कैसे भिन्न थे? कोई एक कारण बताओ।
उत्तर – धर्मशास्त्रों में ब्राह्मणों ने अपने दृष्टिकोण को सार्वभौमिक माना, पर असल में समाज में क्षेत्रीय विभिन्नताएँ थीं और ब्राह्मणों का प्रभाव हर जगह एक जैसा नहीं था। कई लोग ब्राह्मण नियमों को नहीं मानते थे, और शायद इसीलिए धर्मशास्त्रों में कुछ विवाह पद्धतियों को 'निंदित' कहा गया, जो शायद उन्हीं लोगों में प्रचलित थीं।

» स्त्री का गोत्र और मातृत्व का महत्व

प्रश्न 17 (आसान). गोत्र व्यवस्था का पहला महत्वपूर्ण नियम क्या था?
उत्तर – विवाह के बाद स्त्री अपने पिता का गोत्र छोड़कर पति का गोत्र अपनाएगी।

प्रश्न 18 (आसान). 'बहिर्विवाह' का क्या अर्थ है?
उत्तर – अपने गोत्र से बाहर शादी करना।

प्रश्न 19 (मध्यम). सातवाहन राजाओं के मातृनामों का उपयोग क्या दर्शाता है?
उत्तर – यह दर्शाता है कि उनकी माताओं का सामाजिक महत्व बहुत ज़्यादा था, भले ही पितृवंशिक उत्तराधिकार प्रणाली मौजूद थी।

प्रश्न 20 (कठिन). कुछ सातवाहन रानियों ने अपने पिता का गोत्र क्यों बनाए रखा, जबकि ब्राह्मणवादी नियमों में पति का गोत्र अपनाना अपेक्षित था? यह किस प्रथा की ओर इशारा करता है?
उत्तर – यह इस ओर इशारा करता है कि वे ब्राह्मणवादी नियमों का पूरी तरह से पालन नहीं करती थीं और उन्होंने अपने पिता का गोत्र बनाए रखा। यह 'अंतर्विवाह' की प्रथा को भी दर्शाता है, यानी अपने ही बंधुओं में विवाह।

» वर्ण व्यवस्था और 'उचित' जीविका

प्रश्न 21 (आसान). वर्ण व्यवस्था में कुल कितने वर्ण थे?
उत्तर – चार

प्रश्न 22 (आसान). शूद्रों का मुख्य काम क्या था?
उत्तर – तीनों उच्च वर्णों की सेवा करना

प्रश्न 23 (मध्यम). वैश्यों के लिए कौन-कौन सी 'उचित' जीविकाएँ बताई गई थीं?
उत्तर – कृषि, गौ-पालन, और व्यापार। इसके अलावा, वे यज्ञ करवा सकते थे और दान-दक्षिणा भी दे सकते थे।

प्रश्न 24 (कठिन). ब्राह्मणों ने वर्ण व्यवस्था को दैवीय कैसे बताया? कोई एक तरीका बताओ।
उत्तर – उन्होंने ऋग्वेद के पुरुषसूक्त मंत्र का हवाला दिया, जिसमें बताया गया था कि चारों वर्ण आदि मानव पुरुष के शरीर के अलग-अलग हिस्सों से उपजे हैं।

» अक्षत्रिय राजा और सामाजिक गतिशीलता

प्रश्न 25 (आसान). शास्त्रों के अनुसार, कौन सा वर्ण राजा बन सकता था?
उत्तर – क्षत्रिय

प्रश्न 26 (आसान). मौर्य वंश के शासकों को ब्राह्मण ग्रंथों में किस कुल का बताया गया है?
उत्तर – निम्न कुल का

प्रश्न 27 (मध्यम). मौर्यों के बाद किन ब्राह्मण वंशों ने शासन किया, जो अक्षत्रिय थे?
उत्तर – शुंग और कण्व वंश

प्रश्न 28 (कठिन). शासकों का अक्षत्रिय होना, प्राचीन भारत में सामाजिक गतिशीलता के बारे में क्या बताता है?
उत्तर – यह बताता है कि समाज में लोग अपने वर्ण या जन्म के बंधन को तोड़कर भी महत्वपूर्ण पद प्राप्त कर सकते थे, और राजनीतिक सत्ता केवल जन्म पर आधारित नहीं थी, बल्कि समर्थन और संसाधनों पर भी निर्भर करती थी।

» जाति व्यवस्था और उसका लचीलापन

प्रश्न 29 (आसान). वर्ण और जाति में मुख्य अंतर क्या था?
उत्तर – वर्णों की संख्या (चार) निश्चित थी, जबकि जातियों की कोई निश्चित संख्या नहीं थी।

प्रश्न 30 (आसान). नए समुदायों को ब्राह्मणीय व्यवस्था में कैसे शामिल किया जाता था?
उत्तर – उन्हें अक्सर उनकी जीविका या निवास स्थान के आधार पर जाति में वर्गीकृत कर दिया जाता था।

प्रश्न 31 (मध्यम). मंदसौर के रेशम बुनकरों का उदाहरण जाति व्यवस्था के लचीलेपन को कैसे दिखाता है?
उत्तर – यह दिखाता है कि एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने और अपनी जीविका के अनुसार संगठित होने से एक नई श्रेणी (जाति) बन सकती थी, जो सामाजिक बदलाव का हिस्सा थी।

प्रश्न 32 (कठिन). अगर कोई व्यक्ति अपनी पारंपरिक जातिगत जीविका छोड़कर कोई और काम अपना ले, तो इससे जाति व्यवस्था के किस पहलू पर प्रकाश पड़ता है?
उत्तर – यह जाति व्यवस्था में मौजूद गतिशीलता और लचीलेपन को दिखाता है, जहाँ व्यक्ति अपनी आजीविका बदल सकते थे, भले ही शास्त्रों ने कठोर नियम बनाए हों।

» चार वर्णों से परे: एकीकरण और बहिष्करण

प्रश्न 33 (आसान). ब्राह्मणों ने किन कर्मों को 'पुनीत' और 'पवित्र' माना था?
उत्तर – ब्राह्मणों ने अनुष्ठानों से जुड़े कर्मों को 'पुनीत' और 'पवित्र' माना था।

प्रश्न 34 (आसान). कौन से दो चीनी बौद्ध भिक्षुओं ने भारत में अस्पृश्यों की स्थिति का उल्लेख किया है?
उत्तर – चीनी बौद्ध भिक्षु फा-शिएन और श्वैन-त्सांग ने भारत में अस्पृश्यों की स्थिति का उल्लेख किया है।

प्रश्न 35 (मध्यम). अस्पृश्यों को सड़क पर चलते समय क्या करना पड़ता था ताकि अन्य लोग उनसे दूर रहें?
उत्तर – फा-शिएन के अनुसार, अस्पृश्यों को सड़क पर चलते हुए करताल बजाकर अपने होने की सूचना देनी पड़ती थी ताकि अन्य लोग उन्हें देखने के दोष से बच सकें।

प्रश्न 36 (कठिन). मातंग जातक कथा किस बात पर प्रकाश डालती है कि चांडालों ने अपने हीन जीवन को स्वीकार किया था या उसका प्रतिरोध किया था?
उत्तर – मातंग जातक कथा यह दिखाती है कि चांडालों ने अपने हीन जीवन का प्रतिरोध भी किया था। बोधिसत्व मातंग (जो एक चांडाल थे) ने ज्ञान प्राप्त कर ब्राह्मणों के अहंकार को चुनौती दी, यह दर्शाता है कि कुछ चांडालों ने शास्त्रों में निर्धारित अपने निम्न स्थान को स्वीकार नहीं किया, बल्कि आध्यात्मिक शक्ति और नैतिकता के आधार पर सामाजिक भेद को नकारा।

» संपत्ति पर स्त्री और पुरुष के अधिकार

प्रश्न 37 (आसान). मनुस्मृति के अनुसार, पैतृक संपत्ति में किसका अधिकार था?
उत्तर – पुत्रों का।

प्रश्न 38 (आसान). स्त्रियों को विवाह के समय मिले उपहारों को क्या कहा जाता था?
उत्तर – स्त्रीधन।

प्रश्न 39 (मध्यम). स्त्रीधन पर किसका स्वामित्व होता था? क्या पति का उस पर कोई अधिकार था?
उत्तर – स्त्रीधन पर स्वयं स्त्री का स्वामित्व होता था। उसके पति का उस पर कोई अधिकार नहीं होता था।

प्रश्न 40 (कठिन). आपकी राय में, मनुस्मृति के संपत्ति संबंधी नियम स्त्री और पुरुष के बीच किस प्रकार की सामाजिक विषमता को बढ़ावा देते थे?
उत्तर – ये नियम पुरुषों को पैतृक संपत्ति का अधिकार देकर उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाते थे, जबकि स्त्रियों को इस अधिकार से वंचित करके उन्हें आर्थिक रूप से पुरुषों पर निर्भर बना देते थे। इससे समाज में पुरुषों की सामाजिक हैसियत ऊंची और स्त्रियों की नीची होती थी, जिससे लैंगिक विषमता बढ़ती थी।

» बौद्ध धर्म की सामाजिक अनुबंध अवधारणा

प्रश्न 41 (आसान). बौद्ध धर्म की सामाजिक अनुबंध अवधारणा किस ग्रंथ में वर्णित है?
उत्तर – सुत्तपिटक

प्रश्न 42 (आसान). बौद्ध अवधारणा में राजा का दूसरा नाम क्या था?
उत्तर – महासम्मत

प्रश्न 43 (मध्यम). इस अवधारणा के अनुसार, लोगों ने राजा को क्यों चुना?
उत्तर – लोगों ने राजा को इसलिए चुना ताकि वह समाज में बढ़ते लालच, हिंसा और कपट को नियंत्रित करे, और उचित व्यवस्था बनाए रखे।

प्रश्न 44 (कठिन). ब्राह्मणवादी दैवीय व्यवस्था से बौद्ध धर्म की सामाजिक अनुबंध अवधारणा किस प्रकार भिन्न थी?
उत्तर – ब्राह्मणवादी दैवीय व्यवस्था में राजा को ईश्वर द्वारा नियुक्त माना जाता था, जबकि बौद्ध धर्म की सामाजिक अनुबंध अवधारणा के अनुसार राजा का पद लोगों द्वारा आपसी सहमति से चुना गया था ताकि वे अपनी समस्याओं का समाधान कर सकें। यह मानवीय कर्म और इच्छा पर आधारित था, न कि दैवीय आदेश पर।

» इतिहासकार साहित्यिक स्रोतों का उपयोग कैसे करते हैं

प्रश्न 45 (आसान). महाभारत किस मुख्य भाषा में लिखी गई है?
उत्तर – संस्कृत

प्रश्न 46 (आसान). महाभारत की विषयवस्तु के दो मुख्य प्रकार क्या हैं?
उत्तर – आख्यान और उपदेशात्मक

प्रश्न 47 (मध्यम). इतिहासकार 'लेखक' के बारे में क्यों जानना चाहते हैं, जब वे किसी ग्रंथ का विश्लेषण करते हैं?
उत्तर – क्योंकि लेखक के दृष्टिकोण और विचारों ने ग्रंथ को आकार दिया होता है।

प्रश्न 48 (कठिन). अगर कोई ग्रंथ कई चरणों में लिखा गया हो, तो इतिहासकार के लिए उसका विश्लेषण करना क्यों अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है?
उत्तर – क्योंकि विभिन्न समयों पर अलग-अलग लेखकों और विचारों के प्रभाव के कारण ग्रंथ की मूल विषयवस्तु और बाद के बदलावों को अलग करना मुश्किल होता है।

» महाभारत: एक गतिशील ग्रंथ

प्रश्न 49 (आसान). महाभारत को 'गतिशील ग्रंथ' क्यों कहा जाता है?

उत्तर – क्योंकि यह सदियों से विभिन्न भाषाओं में विकसित होता रहा है, इसमें क्षेत्रीय कहानियाँ शामिल की गई हैं, और इसकी मुख्य कथा की कई बार व्याख्याएँ की गई हैं।

प्रश्न 50 (आसान). महाभारत के गतिशील होने का एक परिणाम बताओ।

उत्तर – इसके अनेक पाठान्तर अलग-अलग भाषाओं में लिखे गए।

प्रश्न 51 (मध्यम). महाभारत की कौन सी बात उसे एक 'बहती नदी' जैसा बनाती है?

उत्तर – जैसे नदी अपने रास्ते में बहुत कुछ अपने में मिलाती चलती है और हर जगह उसका रूप थोड़ा बदल जाता है, वैसे ही महाभारत ने भी अनेक क्षेत्रीय कहानियों को अपने में समाहित किया और समय के साथ अलग-अलग रूपों में सामने आता रहा।

प्रश्न 52 (कठिन). महाश्वेता देवी ने अपनी कहानी 'कुंती ओ निषादी' में महाभारत के किस प्रसंग की पुनर्व्याख्या की है और क्यों?

उत्तर – उन्होंने लाक्षागृह की घटना की पुनर्व्याख्या की है। उन्होंने कुंती के इस कृत्य पर नैतिक सवाल उठाकर उन पहलुओं पर ध्यान दिलाया है जिन पर मूल संस्कृत पाठ चुप है, और इस प्रकार समाज के एक उपेक्षित वर्ग (निषादी) के दृष्टिकोण को सामने रखा है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. महाभारत के समालोचनात्मक संस्करण परियोजना में विद्वानों ने क्या मुख्य कार्य किए?

› पहला कदम: उन्होंने पूरे भारत से संस्कृत में लिखी हुई महाभारत की विभिन्न पांडुलिपियों को इकट्ठा किया।

› दूसरा कदम: फिर उन्होंने हर पांडुलिपि के श्लोकों की आपस में तुलना की, यानी एक-दूसरे से मिलाया।

› तीसरा कदम: जो श्लोक लगभग सभी पांडुलिपियों में एक जैसे मिले, उन्हें चुनकर मुख्य पाठ के रूप में प्रकाशित किया गया।

› चौथा कदम: जो श्लोक अलग-अलग जगहों पर थोड़े बदले हुए थे (क्षेत्रीय भिन्नताएं), उन्हें मुख्य पाठ से अलग करके पादटिप्पणियों या परिशिष्टों में दर्ज किया गया।

उत्तर – विद्वानों ने देश भर से पांडुलिपियां एकत्र कीं, श्लोकों की तुलना की, समान पाठ का चयन कर मानक संस्करण बनाया और क्षेत्रीय भिन्नताओं को भी दर्ज किया।

उदाहरण 2. प्राचीन भारतीय संदर्भ में 'कुल' और 'जाति' शब्दों का क्या अर्थ था?

› सबसे पहले, यह समझो कि ये शब्द संस्कृत ग्रंथों में प्रयोग किए जाते थे।

› 'कुल' शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से छोटे, सीधे परिवार के लिए होता था।

› 'जाति' शब्द का प्रयोग बंधु-बांधवों के एक बड़े समूह के लिए होता था, जो एक ही वंश के माने जाते थे।

उत्तर – प्राचीन भारतीय संदर्भ में, 'कुल' का अर्थ परिवार था, जबकि 'जाति' का अर्थ बंधु-बांधवों का एक बड़ा समूह था जो एक ही वंश से जुड़े होते थे।

उदाहरण 3. महाभारत के संदर्भ में पितृवंशिक व्यवस्था के महत्व को समझाइए।

› महाभारत युद्ध कौरवों और पांडवों के बीच हस्तिनापुर के सिंहासन के उत्तराधिकार के लिए हुआ था।

› कौरव धृतराष्ट्र के पुत्र थे और पांडव पांडु के पुत्र।

› पितृवंशिक व्यवस्था के अनुसार, पिता के बाद पुत्र को ही अधिकार मिलना चाहिए था।

› धृतराष्ट्र नेत्रहीन होने के कारण पांडु राजा बने, लेकिन उनकी मृत्यु के बाद धृतराष्ट्र राजा बने, क्योंकि राजकुमार छोटे थे।

› दुर्योधन (कौरवों में ज्येष्ठ) को डर था कि अगर पांडव राजा बने तो उनका वंश सत्ता से वंचित हो जाएगा।

› यह संघर्ष पितृवंशिक आदर्श को बनाए रखने और सत्ता के हस्तांतरण को लेकर ही था, जिसमें पुत्रों का अधिकार सर्वोपरि था।

उत्तर – महाभारत का युद्ध हस्तिनापुर के सिंहासन पर 'पितृवंशिक' अधिकार स्थापित करने के लिए लड़ा गया था, जहाँ

सत्ता पिता से पुत्र को ही मिलती थी। कौरवों के दुर्योधन का अपनी वंशावली के अधिकार को बचाने का संघर्ष इस व्यवस्था के महत्व को दर्शाता है।

उदाहरण 4. प्राचीन भारतीय समाज में 'बहिर्विवाह' का क्या अर्थ था और यह पितृवंशिक व्यवस्था से कैसे जुड़ा था?

› सबसे पहले, हम 'बहिर्विवाह' को परिभाषित करेंगे: 'बहिर्विवाह' का अर्थ था अपने गोत्र से बाहर विवाह करना।

› फिर, हम समझेंगे कि यह पितृवंशिक व्यवस्था में क्यों महत्वपूर्ण था: पुत्रियों को पैतृक संपत्ति में अधिकार नहीं मिलता था।

› पुत्रियों की शादी उनके अपने गोत्र से बाहर की जाती थी ताकि उनका गोत्र बदल जाए और वे अपने पति के गोत्र का हिस्सा बन जाएँ।

› यह प्रथा यह सुनिश्चित करती थी कि परिवार की संपत्ति और पहचान पुत्रों के माध्यम से ही आगे बढ़े।

› कन्यादान, यानी विवाह में कन्या को भेंट करना, पिता का एक बहुत महत्वपूर्ण धार्मिक कर्तव्य माना जाता था, जो इसी व्यवस्था का हिस्सा था।

उत्तर – बहिर्विवाह का अर्थ था अपने गोत्र से बाहर शादी करना। यह पितृवंशिक व्यवस्था से इसलिए जुड़ा था क्योंकि बेटियों को पैतृक संपत्ति में अधिकार नहीं मिलता था, और उन्हें अपने गोत्र से बाहर शादी करके पति के गोत्र में शामिल होना पड़ता था, जिससे पैतृक संपत्ति पुत्रों के पास ही रहती थी और पितृवंश आगे बढ़ता था।

उदाहरण 5. सातवाहन राजाओं के नामों में 'गोतमीपुत्त' और 'वसिथिपुत्त' जैसे नाम क्यों मिलते हैं? ये क्या दिखाते हैं?

› सबसे पहले, हमें समझना होगा कि 'पुत्त' का मतलब 'पुत्र' होता है, जैसे 'गोतमीपुत्त' का मतलब 'गोतमी का पुत्र'।

› अब, 'गोतमी' और 'वसिथि' असल में स्त्रियों के नाम थे, जो गौतम और वशिष्ठ ऋषियों के नाम से बने गोत्रों को दर्शाते हैं।

› इसका मतलब है कि सातवाहन राजा अपने नाम के साथ अपनी माँ के गोत्र का नाम जोड़ते थे, जैसे 'गोतमी का पुत्र सिरी-सातकनि' या 'वसिथि का पुत्र सिरी-पुलुमायि'।

› यह इस बात की तरफ इशारा करता है कि भले ही पितृवंशिक व्यवस्था थी, फिर भी इन राजाओं के लिए उनकी माताओं का महत्व बहुत ज़्यादा था, तभी वे उनके गोत्र को अपने नाम के साथ गर्व से जोड़ते थे।

उत्तर – सातवाहन राजाओं के नाम जैसे 'गोतमीपुत्त' और 'वसिथिपुत्त' उनकी माताओं के गोत्रों से लिए गए थे, जो यह दर्शाता है कि उस समय माताएँ सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण थीं, भले ही सिंहासन का उत्तराधिकार पुत्रों को ही मिलता था।

उदाहरण 6. वर्ण व्यवस्था के अनुसार ब्राह्मणों और क्षत्रियों के 'उचित' काम क्या थे?

› सबसे पहले, हमें यह याद करना होगा कि वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मणों को पहला स्थान प्राप्त था।

› फिर सोचो, ब्राह्मणों का मुख्य काम क्या बताया गया था? हाँ, वेदों का अध्ययन करना, यज्ञ करवाना और दान लेना।

› अब क्षत्रियों की बात आती है। क्षत्रिय राजा होते थे, तो उनका मुख्य काम क्या होगा? लोगों की रक्षा करना, युद्ध करना और न्याय करना।

› साथ ही, वे वेद भी पढ़ सकते थे, यज्ञ करवा सकते थे और दान भी दे सकते थे।

› तो, ब्राह्मणों का काम ज्ञान और धर्म से जुड़ा था, जबकि क्षत्रियों का काम शासन और रक्षा से।

उत्तर – ब्राह्मणों के 'उचित' काम थे: अध्ययन करना, वेदों की शिक्षा देना, यज्ञ करना और करवाना, तथा दान देना और लेना। क्षत्रियों के 'उचित' काम थे: युद्ध करना, लोगों को सुरक्षा देना, न्याय करना, वेद पढ़ना, यज्ञ करवाना और दान-दक्षिणा देना।

उदाहरण 7. वर्ण व्यवस्था के अनुसार राजा कौन होना चाहिए था, और मौर्य वंश ने इस नियम को कैसे तोड़ा?

› पहला कदम: वर्ण व्यवस्था के अनुसार, ब्राह्मणों ने कहा कि केवल क्षत्रिय वर्ण के लोग ही राजा बन सकते हैं।

› दूसरा कदम: मौर्य वंश के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य थे। कुछ बौद्ध ग्रंथों में उन्हें क्षत्रिय कहा गया है, लेकिन ज्यादातर ब्राह्मण ग्रंथों में उन्हें 'निम्न' कुल का या गैर-क्षत्रिय माना गया है।

› तीसरा कदम: इसके बावजूद, मौर्यों ने भारत में एक विशाल और शक्तिशाली साम्राज्य स्थापित किया, जो वर्ण व्यवस्था के इस नियम के विपरीत था।

› चौथा कदम: इससे पता चलता है कि राजनीतिक सत्ता का उपभोग वो लोग भी कर सकते थे जो क्षत्रिय नहीं थे, बस उनके पास समर्थन और पर्याप्त संसाधन होने चाहिए थे।

उत्तर – वर्ण व्यवस्था के अनुसार, राजा क्षत्रिय होने चाहिए थे। लेकिन मौर्य वंश के शासक, खासकर चंद्रगुप्त मौर्य, को ब्राह्मण ग्रंथों में 'निम्न' कुल का माना गया है। इसके बावजूद, उन्होंने एक विशाल साम्राज्य पर शासन किया, यह दर्शाता है कि राजनीतिक सत्ता जन्म से अधिक समर्थन और संसाधनों पर निर्भर करती थी।

उदाहरण 8. प्राचीन भारत में मंदसौर (दशपुर) में रेशम के बुनकरों की श्रेणी ने अपने धन का उपयोग कैसे किया, और यह क्या दर्शाता है?

› पहले रेशम बुनकर गुजरात (लाट) से मंदसौर (दशपुर) आए थे।

› वे मूल रूप से एक ही जीविका - रेशम बुनने - से जुड़े थे, इसलिए उन्होंने अपनी एक 'श्रेणी' बनाई।

› इस श्रेणी के सदस्यों ने सामूहिक रूप से अपने शिल्प से कमाए गए धन को सूर्य देवता के सम्मान में एक मंदिर बनवाने पर खर्च किया।

› यह दर्शाता है कि एक जैसी जीविका वाले लोग संगठित होकर सामाजिक और धार्मिक कार्यों में भी भाग लेते थे, और जाति व्यवस्था में आर्थिक गतिशीलता और सामूहिक पहचान भी थी।

उत्तर – मंदसौर के रेशम बुनकरों की श्रेणी ने अपने अर्जित धन से सूर्य देवता का मंदिर बनवाया। यह दर्शाता है कि जातियाँ सिर्फ जन्म पर आधारित नहीं थीं, बल्कि व्यवसाय से भी बनती थीं और इनमें आपसी सहयोग व सामाजिक गतिशीलता भी थी।

उदाहरण 9. प्राचीन काल में 'चांडाल' किन्हें कहा जाता था और मनुस्मृति में उनके लिए क्या कर्तव्य निर्धारित किए गए थे?

› सबसे पहले, हमें यह समझना होगा कि 'चांडाल' उन लोगों को कहा जाता था जो वर्ण व्यवस्था में सबसे निम्न श्रेणी में आते थे।

› मुख्यतः, जो लोग शवों का अंतिम संस्कार करते थे या मरे हुए पशुओं को छूते थे, उन्हें 'दूषित' माना जाता था और उन्हें चांडाल कहते थे।

› मनुस्मृति के अनुसार, चांडालों को गाँव से बाहर रहना पड़ता था।

› उन्हें फेंके हुए बर्तनों का इस्तेमाल करना होता था, मरे हुए लोगों के वस्त्र और लोहे के आभूषण पहनने पड़ते थे।

› रात में वे गाँव या नगर में चल-फिर नहीं सकते थे।

› संबंधियों से विहीन मृतकों की अंत्येष्टि करना और वधिक (फांसी देने वाले) के रूप में कार्य करना भी उनके कर्तव्यों में शामिल था।

उत्तर – प्राचीन काल में 'चांडाल' उन लोगों को कहा जाता था जो शवों की अंत्येष्टि और मृत पशुओं को छूने जैसे 'दूषित' कार्य करते थे। मनुस्मृति के अनुसार, उन्हें गाँव के बाहर रहना पड़ता था, फेंके हुए बर्तनों का उपयोग करना होता था, और मरे हुए लोगों के वस्त्र तथा लोहे के आभूषण पहनने पड़ते थे। रात्रि में वे नगर में प्रवेश नहीं कर सकते थे और उन्हें मृतकों की अंत्येष्टि तथा वधिक का कार्य करना होता था।

उदाहरण 10. मनुस्मृति के अनुसार, यदि एक परिवार में पिता की मृत्यु हो जाती है और उसके तीन बेटे और एक बेटी है, तो संपत्ति का बंटवारा कैसे होगा?

› सबसे पहले, यह देखेंगे कि पैतृक संपत्ति पर बेटों का अधिकार था, न कि बेटियों का।

› तीन बेटों में संपत्ति का बंटवारा होगा।

› ज्येष्ठ पुत्र (सबसे बड़े बेटे) को विशेष भाग मिलेगा, यानी बाकी दो बेटों से थोड़ा ज़्यादा।

› बेटी को इस पैतृक संपत्ति में से कोई हिस्सा नहीं मिलेगा।

उत्तर – पैतृक संपत्ति तीन बेटों में विभाजित होगी, जिसमें सबसे बड़े बेटे को दूसरों से अधिक हिस्सा मिलेगा, और बेटी को इसमें से कोई हिस्सा नहीं मिलेगा।

उदाहरण 11. बौद्ध धर्म की सामाजिक अनुबंध अवधारणा के अनुसार, राजा का पद किस पर निर्भर करता था?

› पहले मानव समाज में शांति थी, लेकिन धीरे-धीरे लालच और झगड़े बढ़े।

› लोग यह सोचने लगे कि इन समस्याओं को सुलझाने के लिए किसी को चुनना चाहिए।

› उन्होंने मिलकर एक ऐसे व्यक्ति को चुना जो गलत करने वालों को दंडित करे और व्यवस्था बनाए रखे।

› इस चुने हुए व्यक्ति को उन्होंने 'महासम्मत' की उपाधि दी, और लोग उसे सेवा के बदले 'कर' देते थे।

› तो, राजा का पद लोगों द्वारा चुने जाने पर निर्भर था।

उत्तर – बौद्ध धर्म की सामाजिक अनुबंध अवधारणा के अनुसार, राजा का पद 'लोगों द्वारा चुने जाने' पर निर्भर करता था।

उदाहरण 12. महाभारत का विश्लेषण करते समय इतिहासकार किन मुख्य पहलुओं पर विचार करते हैं?

› सबसे पहले, इतिहासकार ग्रंथ की 'भाषा' पर ध्यान देते हैं। महाभारत मुख्य रूप से संस्कृत में है, लेकिन यह वेदों की संस्कृत से थोड़ी सरल है, जिससे पता चलता है कि यह बड़े जनसमुदाय के लिए थी।

› फिर, 'विषयवस्तु' देखते हैं। क्या यह सिर्फ़ कहानियों का संग्रह है (आख्यान) या इसमें कोई सीख या उपदेश भी है (उपदेशात्मक)? महाभारत में दोनों हैं, लेकिन उपदेशात्मक अंश बाद में जोड़े गए लगते हैं।

› इसके बाद, 'लेखक' और उनके दृष्टिकोण को समझते हैं। मूल कथा शायद भाट सारथी ('सूत') ने गाई होगी, लेकिन बाद में ब्राह्मणों ने इसे लिखा और इसमें बदलाव किए।

› 'श्रोता' कौन थे, यह भी ज़रूरी है। लेखक ने किन लोगों को ध्यान में रखकर लिखा? क्या नए राजाओं के लिए नए मूल्य स्थापित किए जा रहे थे?

› अंत में, 'रचनाकाल और रचनाभूमि' का भी विश्लेषण करते हैं। महाभारत कई चरणों में लिखी गई, लगभग 500 ई.पू. से 400 ई. तक। इस दौरान विष्णु की पूजा और श्री कृष्ण को विष्णु का रूप मानना जैसे बदलाव भी आए।

उत्तर – इतिहासकार भाषा, विषयवस्तु, लेखक, श्रोता, रचनाकाल और रचनाभूमि जैसे अनेक पहलुओं पर विचार करके महाभारत जैसे साहित्यिक स्रोतों का विश्लेषण करते हैं।

उदाहरण 13. महाभारत के 'गतिशील ग्रंथ' होने का क्या अर्थ है? एक उदाहरण से स्पष्ट कीजिए।

› पहले समझाएँ कि 'गतिशील' का मतलब क्या है - निरंतर बदलाव और विकास।

› बताएँ कि महाभारत का विकास संस्कृत पाठ पर ही नहीं रुका, बल्कि यह सदियों तक जारी रहा।

› उदाहरण दें कि कैसे अलग-अलग भाषाओं में इसके पाठान्तर लिखे गए और क्षेत्रीय कहानियों को इसमें शामिल किया गया।

› यह भी बताएँ कि मुख्य कथा की कई बार अलग-अलग ढंग से व्याख्याएँ की गईं, जैसे महाश्वेता देवी का उदाहरण।

› निष्कर्ष में बताएँ कि ये सब मिलकर महाभारत को एक 'गतिशील ग्रंथ' बनाते हैं।

उत्तर – महाभारत का 'गतिशील ग्रंथ' होना यह बताता है कि यह सिर्फ़ एक ठहरा हुआ प्राचीन पाठ नहीं, बल्कि समय के साथ निरंतर बदलता, विकसित होता और नए रूप लेता रहा है। इसका अर्थ है कि सदियों से इसके अनेक पाठान्तर अलग-अलग भाषाओं में लिखे गए, कई क्षेत्रीय कहानियाँ इसमें समाहित हो गईं, और इसकी मुख्य कथा की भी अलग-अलग तरह से व्याख्याएँ की गईं। उदाहरण के लिए, लाक्षागृह वाली घटना को ही लें, जिसमें पांडवों को छल से जलाने की कोशिश की गई थी। बांग्ला लेखिका महाश्वेता देवी ने अपनी कहानी 'कुंती ओ निषादी' में इसी घटना को एक अलग दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। उन्होंने उन प्रश्नों पर ध्यान दिलाया है जिन पर संस्कृत का मूल पाठ चुप है, जैसे कुंती के इस कृत्य पर नैतिक सवाल उठाना। यह दर्शाता है कि मूल कहानी का आधार वही रहता है, लेकिन समय के साथ लेखक और समाज उसे नए अर्थ देते रहते हैं, जिससे यह ग्रंथ हमेशा जीवंत बना रहता है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस परियोजना के महत्व, इसकी प्रक्रिया और इससे निकले निष्कर्षों पर प्रश्न आते हैं।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर प्रारंभिक समाजों की संरचना और रिश्तों पर सीधे प्रश्न के रूप में आता है, तो 'कुल' और 'जाति' के अंतर को ध्यान से समझना।

• महाभारत के संदर्भ में पितृवंशिकता पर अक्सर प्रश्न आते हैं। यह ज़रूर समझाएं कि युद्ध का मूल कारण सत्ता का पितृवंशिक उत्तराधिकार था।

• सातवाहन राजाओं के मातृनामों का उपयोग एक बहुत ही महत्वपूर्ण उदाहरण है। इसे ध्यान से समझो, क्योंकि यह अक्सर बोर्ड परीक्षा में पूछा जाता है कि यह क्या दर्शाता है और क्यों महत्वपूर्ण है।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर पूछी जाती है, खासकर वर्णों और उनके कार्यों का मिलान करने वाले प्रश्न आते हैं। इसे ध्यान से समझो।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मौर्य और अन्य गैर-क्षत्रिय शासकों के उदाहरणों के साथ इस बिंदु को स्पष्ट रूप से समझाना, आपको अच्छे अंक दिलाएगा।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा में अक्सर जाति और वर्ण के अंतर को समझाने या जाति व्यवस्था में सामाजिक गतिशीलता पर प्रश्न के रूप में पूछी जाती है। मंदसौर अभिलेख का उदाहरण अच्छे अंक दिला सकता है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'चांडालों के कर्तव्य' पर सीधा प्रश्न आ सकता है, या 'अस्पृश्यता' के कारण सामाजिक विषमता पर निबंधात्मक प्रश्न भी आ सकते हैं। मनुस्मृति के संदर्भ और चीनी यात्रियों के विवरण को याद रखना।

• यह प्रश्न अक्सर सीधे तौर पर पूछा जाता है कि बौद्ध धर्म की सामाजिक अनुबंध अवधारणा क्या थी, और यह ब्राह्मणवादी व्यवस्था से कैसे भिन्न थी। उदाहरण सहित उत्तर देना बहुत ज़रूरी है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! अक्सर इस पर सीधा प्रश्न आता है कि इतिहासकार साहित्यिक स्रोतों का उपयोग कैसे करते हैं। आपको सभी मुख्य पहलुओं को याद रखना और उन्हें उदाहरण के साथ समझाना आना चाहिए।

एक नज़र में रिवीज़न

› महाभारत का मानक पाठ, वी.एस. सुकथांकर, 1919, पांडुलिपियाँ, क्षेत्रीय भिन्नताएँ।
› परिवार ('कुल') और बंधुता ('जाति') की अवधारणाएँ प्राचीन समाज को समझने में सहायक।
› पितृवंशिकता: पिता से पुत्र को वंश/संसाधन/अधिकार; महाभारत का आधार।
› गोत्र नियम (बहिर्विवाह), सातवाहन राजाओं के मातृनाम (माताओं का महत्व)।
› वर्ण व्यवस्था: समाज के 4 वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) और उनके जन्म आधारित 'उचित' कर्म।
› राजा बनने के लिए केवल क्षत्रिय होना ज़रूरी नहीं था; समर्थन और संसाधन भी मायने रखते थे।
› वर्ण 4, जातियाँ अनिश्चित; नए समुदाय जातियों में समाहित होते थे।
› ब्राह्मणों द्वारा वर्णों से परे माने गए समुदाय; 'अस्पृश्य' घोषित, चांडालों का बहिष्कृत जीवन।
› बौद्ध धर्म: राजा पद लोगों द्वारा चुना गया ('महासम्मत'), मानवीय कर्म आधारित।
› इतिहासकार साहित्यिक स्रोतों का विश्लेषण भाषा, विषयवस्तु, लेखक, श्रोता, काल-भूमि देखकर करते हैं।